EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 7, Issue 2, July-December 2018, Impact Factor: 5.138 Available online at: www.eduzonejournal.com

रेणु के कहानी साहित्य में ग्रामीण चेतना

अनीता कुमारी

विषय–हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय कॉलेज, भिवानी

फणीश्वरनाथ रेणु की प्रसिद्धि ग्रामकथा–लेखन और यथार्थवादी से हुआ है। फणीश्वरनाथ रेणु को विशेषतः 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' के रूप में याद किया जाता है जबकि रेणु जी ने पाँच दर्जन से अधिक कहानियों की भी रचना की है। रेणु की पहली औपन्यासिक कृति मैला आँचल का प्रकाशन में हुआ। उसे 'गोदान' के बाद का दूसरा महाकाव्यात्मक उपन्यास माना गया।

शिक्षा औद्योगीकरण एवं आधुनिकीकरण गांव को नयी मानसिकता प्रदान करते है। अंधविश्वासों के जड़बद्धता संस्कार अब हिलने लगे हैं। ''रेणु'' को ग्राम परिवेश का समग्र बोध है। उन्हें उसके यथार्थ की गहरी परख और पहचान

फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म 4 मार्च, 1921 में औराही हिंगना नामक गाँव, जिला – पूर्णिया (बिहार) में हुआ था। प्रेमचन्द की भाँति फणीश्वरनाथ रेणु की प्रसिद्धि भी ग्रामकथा–लेखन और यथार्थवादी दृष्टिकोण के लिए है। प्रेमचन्द बड़े कहानीकार है या उपन्यासकार इस सम्बन्ध में आलोचकों में मतभेद है। कुछ यही स्थिति फणीश्वरनाथ रेणु की है। विशेषतः 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' के कारण उन्हें एक कालजयी लेखक के रूप में याद किया जाता है उनकी प्रमुख प्रकाशित पुस्तकें हैं – मैला आँचल, परती परिकथा, दीर्घतपा, जुलूस, (उपन्यास) – ठुमरी, अग्निखोर, आदिम रात्रि की महक, एक श्रावणी दोपहरी की धूप, सम्पूर्ण कहानियाँ (कहानी–संग्रह), रेणु रचनावली (समग्र) प्रमुख है।

उन्होंने 'रसप्रिया', 'लाल पान की बेगम', 'पंचलाईट', 'संवादिया' और 'तीसरी कसम' अर्थात् 'मारे गए गुलफाम' जैसी अमर कहानियाँ लिखी है तो 'अतिथि सत्कार', नैनाजोगिन' और 'एक आदिम रात्रि की महक' जैसी प्रयोगशील कहानियाँ भी लिखी है। उनकी कहानियों में अन्तर्वस्तु के अनुरूप ही शिल्प–विधान भी विलक्षण होता है।

फणीश्वरनाथ रेणु ने 1936 के आसपास से कहानी–लेखन की शुरूआत की थी। कई अंतरंग स्रोतों से उपलब्ध जानकारियों से यह ज्ञात हुआ कि उस समय उनकी कुछ कहानियाँ प्रकाशित भी हुई थी। पर वे किशोर रेणु की अपरिपक्व कहानियाँ थी। 1942 के आंदोलन में गिरफ्तार होने के बाद जब वे 1944 में जेलमुक्त हुए, तब घर लौटने पर उन्होंने 'बटबाबा' नामक पहली परिपक्व कहानी लिखी। 'बटबाबा' साप्ताहिक 'विश्वामित्र' के 27 अगस्त, 1944 के अंत में प्रकाशित हुई। रेणु की दूसरी कहानी 'पहलवान की ढोलक' 11 दिसम्बर 1944 के साप्ताहिक 'विश्वामित्र' में छापी। 1972 में रेणु ने अपनी अंतिम कहानी 'भितिचित्र की मयूरी' लिखी। अपने 29 वर्षो के कहानी–लेखन के दौरान रेणु की प्रकाशित कहानियों की सूची बहुत बड़ी नहीं है। उनकी अब तक उपलब्ध कहानियों की संख्या 63 है।''1

रेणु की पहली औपन्यासिक कृति मैला आँचल का प्रकाशन अगस्त, 1954 में हुआ। रेणु ने वहीं से प्रारंभ किया। पर यह सर्वमान्य सत्य है कि कोई रचनाकार अचानक ऐसी कृति नहीं लिख सकता, उसके पीछे उसका लंबा रचनात्मक अनुभव और जीवनानुभव जरूरी है।''2

मानवीय आस्था, राजनीतिक विश्वास की पहचान भी उनकी शुरू की कहानियों में दिखाई पड़ती है। राजनीतिक पार्टियों के प्रति मोहभंग की उनकी मनः स्थिति प्रारंभ में ही बन गई थी, जिसका पता 1945 में प्रकाशित कहानी 'पार्टी का भूत' से चलता है। सोशलिस्ट पार्टी के प्रति उनका मोह शुरू से ही रहा, पर उससे भी उनका मोहभंग 'मैला आँचल' के रचनाकाल ;1952–53द्ध तक हो चुका था। भारतीय राजनीति में जो आदर्श था, आजादी के बाद उसका अस्तित्व भी छिन्न–भिन्न होने लगा। जो आदर्शवादी राजनीतिक संघर्ष के सेनानी–क्रांतिकारी थे, आजादी के बाद किस तरह बदत्तर हालत में जीते रहे, वह 1949 में लिखित कहानी 'धर्मक्षेत्रो–कुरूक्षेत्रो' में साफ दिखलाई पड़ता है। रेणु की कहानियों और कथा–रिपोतीजों में उसकी गहरी पकड़ है। उनकी 'खंडहर' कहानी उनके अपने ही जीवन–संदर्भ की कहानी है, जिसके पात्र को अपने अंदर और बाहर के माहौल से एक साथ संघर्ष करना पड़ता है। रेणु भी चाहते तो अपने प्रारंभिक क्रांतिकारी जीवन को भुनाते और किसी उफँचे पद पर जाकर सुखी जीवन बिताते। पर वे तब तक के लिए संघर्ष का रास्ता अपनाए रखते हैं, जब तक आम लोग सुखी–सम्पन्न नहीं हो जाते।

स्वतंत्रता से पूर्व भारतीय ग्राम निवासी नगरों में आने वाली जागरूकता एवं परिवर्तनशीलता से सर्वथा अपरिचित रहते थे और इस कारण अधिकांश सुविधाओं से भी वंचित रहते थे। देश को स्वतंत्र कराने के पश्चात् स्वभावतः ग्रामों की समस्याओं की ओर भी नेताओं का ध्यान गया और उनके सर्वांगीण विकास पर बल दिया गया। इन नेताओं ने स्वतंत्रता के लिए होने वाले संघर्ष के समय देश के ग्रामांचलों में जागृति–संदेश देते समय उसकी समस्याओं के विविध पक्षों का अध्ययन किया था। स्वभावतः विकास–कार्यो की ओर उन्हें अग्रसर होना ही था।

फणीश्वरनाथ ''रेणु'' ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के ग्रामांचलों को अपने उपन्यासों का विषय बनाया और मात्र अपने दो आंचलिक उपन्यासों द्वारा ग्राम – जीवन की सम्पूर्ण कथा को हमारे सामने रख दिया।

रेणु प्रेमचंद के बाद ग्रामीण जीवन के सबसे प्रमुख कथाकार है। जो ग्राम–केन्द्रित कहानियाँ लिख रहे थे, प्रेमचंद के नक्शे–कदम पर चले। पर रेणु की कहानियाँ आज भी अलग ही अंदाज दिखाती है। इसका कारण क्या है? प्रेमचंद और रेणु दोनों के पात्रा निम्नवर्गीय हरिजन, किसान, लोहार, बढ़ई, चर्मकार, कर्मकार आदि हैं। दोनों कथाकारों ने साधरण पात्रों की जीवन–कथा की रचना की है इस तरह रेणु एक अलग की परंपरा की शुरूआत करते हैं। ये दोनों महान कथा–शिल्पी मिलकर उस 'साधारण' मनुष्य का पूरा चित्र दे पाते हैं। अन्यथा, एक प्रकार से दोनों अपने–अपने एकांगी हैं। रेणु प्रेमचंद के संपूरक कथाकार हैं। इसका मतलब यह नहीं कि रेणु का जनता की समस्याओं के प्रति ध्यान नहीं। वे कहते हैं – ''............. मैंने जमीन, भूमिहीनों और खेतिहर मजदूरों की समस्याओं को लेकर बाते कीं। जातिवाद, भाई–भतीजावाद और भ्रष्टाचार की पनपती हुई बेल की ओर मात्र इशारा नहीं किया था, इसे समूल नष्ट करने की आवश्यकता पर भी बल दिया था 3
परती परिकथा :–

इस उपन्यास में ''रेणु'' जी की ग्राम जीवन में गहरे पैठ हैं तथा उनकी प्रीति धरती के प्रति और प्रगाढ़ हुई हैं। ग्रामीण जीवन की छोटी–बड़ी सच्चाईयां धरती की छुअन से बनी प्रतीत होती है। ''रेणु'' ने गांव को बड़ी निकटता से देखा ही नहीं, भोगा भी है।

परती परिकथा'' के केन्द्र में परानपुर गांव है। प्रारम्भ का चित्र है......... बहुत उन्नत गांव है परानपुर। सात–आठ हजार की आबादी है। प्रत्येक राजनीतिक पार्टी की शाखा है यहां। धार्मिक संस्थाओं के कई धुरन्धर धर्मध्वजी इस गांव में विराजते हैं।

''परती परिकथा'' में परानपुर गांव की भूमि की समस्या सबसे बड़ी समस्या के रूप में चित्रित है। यह उपन्यास धूल–धूसरित वीरान धरती पर अधिकार के विभिन्न दावों–उपदावों की कथा है, परानपुर के नव–निर्माण की कथा हैं, भूमि सम्बन्धी उन सरकारी सुधारों (लैंड, सर्वे, चकबन्दी उन्मतूलन आदि) की, जिन्होंने अपने प्रभावों की परिणति से गांव को विभिन्न इकाइयों में बाँटकर रख दिया है। जमीन्दार और किसान ही एक धरती पर परस्पर विभिन्न दावेदार नहीं, एक परिवार के ही विभिन्न दावेदार हैं।

''परती परिकथा'' में राजनीति के नाम पर भूदानियों की असफलता का भी थोड़ा चित्रण है जो भूदानियों की स्वार्थ नीतियों को स्पष्ट करता है। भूदान करने में भी किसानों का निजी स्वार्थ कांग्रेसी तथा समाजवादी नेताओं को प्रसन्न करने का है ताकि सर्वे के समय अनुचित रूप से दूसरो की भूमि पर दावा कर अधिकार करने में वे सफल हो सकें। भाई–भाई तक एक दूसरे का भाग हड़पने के फेर में है। गुरूड़ध्ुज ''झा'' ने वकील बनकर इसका खूब लाभ कमाया। लुत्तों ने भी भूदानी कार्यकर्त्ताओं के लिए तीन सौ एकड़ भूमि का दानपत्र बटोरा, परन्तु इसमें अपना कमीशन न मिलने पर जनता को कार्यकर्त्ताओं के विरूद्ध संगठित करने में सफलता प्राप्त की।

भारतीय जनता ने स्वतंत्र भारत से बहुत अधिक उम्मीदें कर रखी थी। किन्तु 15 अगस्त, 1947 की आजादी उन्हें निर्बाध प्रसन्नता न दे सकी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् लोगों को अपने सपने साकार होते नहीं दिखाई दिये। फलस्वरूप मोहभंग की स्थिति से सभी को गुजरना पड़ा।

समाजवाद के बिना स्वतंत्रता असार्थक है यह वे समझते थे। इसलिए 15 अगस्त 1947 की स्वतंत्राता को वे सच्ची स्वतंत्रता नहीं मानते। इसी कारण मेरीगंज के स्वराज्योत्सव में औराही हिंगना का एक समाजवादी कार्यकर्त्ता नारा भी लगाता है कि यह आजादी झूठी है 4 और यह यह समाजवादी व्यक्ति कोई और नहीं स्वयं रेणु है, जो अपने जन्म–ग्राम औराही हिंगना से ''मैला आँचल'' के मेरीगंज में आ पहुँचता है। ग्रामीण–समाज में ''रेणु'' ने जीवन मूल्यों के घात–प्रतिघातों को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है।

''रेणु'' की दृष्टि में मेरीगंज गांव की बीमार सामाजिक स्थिति के दो कारण हैं – बेकारी और गरीबी जिनके कारण सारा गांव विभिन्न जड़ताओं एवं अभावों का भयानक शिकार है। अन्न–वस्त्र जैसी मौलिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं हो पाती है। वर्ग–वैषम्य अपने उग्र रूप में विद्यमान है। मुट्ठी भर अन्न ओश्र तन की लाज मात्र ढ़कने के लिए वस्त्र जुटा सकने में असमर्थ व्यक्ति तिल–तिल मर रहे हैं। जमीन्दार खटमलों की भांति इस सर्वहारा वर्ग को चूसते हैं। जड़ता ऐसी कि

विवश और छटपटाती जिन्दगी जीकर भी वे उफ तक नहीं करते। निर्धन भूखे और नंगे ही रह जाते है और घुट–घुट कर अन्न वस्त्र और दवा के अभाव में दम तोड़ते हैं। लेकिन सम्पन्न वर्ग का जीवन नित्य नई सुविधाओं से मुक्त होता जाता है। मेरीगंज की सामाजिक स्थिति में असामाजिकता के तत्व उभरते हुए दिखाई पड़ते हैं।

इसी प्रकार जीवन के विभिन्न आयाम ''मैला आँचल'' में स्पष्ट रूप से उद्घाटित हुए हैं। परती–परिकथा की कथा का आधार है परानपुर गांव, जो प्रतीक बनकर आया है। यह ग्राम काल्पनिक सम्भावना पर आधारित है और स्वतंत्रता के पश्चात् के संक्रमण–कालीन भारतीय गांवों का प्रतिनिधित्व करता है। परानपुर टूट रहा है। उसके जीवन को बाहरी आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन प्रभावित कर रहा है। परती भूमि की दुख भरी कहानी कोसी नदी की क्रूद्ध से जीवन्त हो उठा है। नये प्रशासन की नयी–नयी योजनाओं के अधीन गांव का नक्शा भी बदल रहा है। 5 और सारा ग्राम नयी सामाजिक और राजनैतिक जीवन भूमि के इर्द–गिर्द घूम रहा है। जान पड़ता है कि कोसी अंचल की कुछ वर्षो की सारी जीवन–गति उपन्यास में उठाकर रख दी गई है।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है जिसका प्रभाव मानव जीवन और मूल्यों पर दृष्टिगत होता है। ''परती परिकथा'' में सामाजिक सन्दर्भ में आये हुए परिवर्तनों द्वारा आहत ग्राम–जीवन की मूल्यवत्ता का जीवंत चित्रण लक्षित होता है। परानपुर गांव अपनी पृथक् ही विशेषता रखता है। लेखन ने इसकी अनेक विशेषताओं के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है – ''ग्राम परनापुर'' थाना रानीगंज, ... परानपुर की प्रतिष्ठा सारे जिले में है। लोग यहाँ दस वर्ष के लड़के से भी बात करते समय अपना पॉकेट एक बार टटोल कर देख लेते हैं। फारबिसगंज बाजार की किसी दुकान पर चले जाइए। ज्यों ही मालूम हुआ कि परानपुर का ग्राहक आया है, दुकानदार अपनी बिखरी हुई चीजों को समेटना शुरू कर देता है......... हाकिम हुक्काम भी यहाँ के लोगों से बात करते समय इस बात का ख्याल रखते हैं कि सिर्फ एक ही गांव में एक वर्ष के अन्दर सरकार की तीन–तीन विभागों के अधिकारियों की आँखों में धुली झोंकी गयी।... ग्राम का सामाजिक जीवन अशान्त है। जमीन्दारों एवं पूंजीपतियों का शोषण प्रमुख रूप से विद्यमान है। गांव टूट रहा है, परिवार विघटित हो रहे है। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे का अधिकार छीनने को तत्पर है। परानपुर गांव की सामाजिकता एवं सामूहिकता दिन–प्रतिदिन टूट रही है। राजनीति की तिकड़में उसको तोड़ती है और उसके निवासियों का दैन्य उन्हें मतजबूर बनाकर तोड़ रहा है। कहीं समय–सन्दर्भ का नया उजाला उसके पुरानेपन को तोड़ता है। बाहर से शिक्षा प्राप्त कर गांव में आनेवाले जितेन्द्र ने उस गांव की वास्तविकता को मूर्त करते हुए ठीक ही कहा है –गांव समाज में मनुष्य के साथ मनुष्य का सम्पर्क घनिष्ठ था किन्तु अब नहीं रहा। एक आदमी के लिए उसके गांव का दूसरा आदमी अज्ञात कुलशील छोड़ और कुछ नहीं। कहाँ है आज का कोई उपयोगी उत्सव अनुष्ठान जहाँ आदमी एक दूसरे से मुक्त प्राण होकर मिल सके? मनुष्य के साथ मनुष्य के प्राणों का योग सूत्रा नहीं ।

संत्रास, कूंठा, घुटन आदि शहरी तत्व अब धेरे–धेरे गांव में प्रवेश पा गये है। गांव की पहचान उसकी एकता और संघटन गरिमा का स्थान धीरे–धीरे वैयक्तिकता लेती जा रही है और व्यक्ति अपने तक सीमित होता जा रहा है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सामाजिक इकाई का व्यक्तित्व खंडित हो गया है। सामाजिक मूल्यों की अवमानना का ही परिणाम है कि गाँव की केन्द्रीय सामूहिकता विखंडन में, प्रेम आत्मीयता वैमनस्य व शत्राुता में, शांति अशांति में, परम्परागत विश्वास,

विश्वासहीनता में परिवर्तित हो रहे हैं। नैतिकता निरन्तर टूट रही है। ईमानदारी और सत्य की आवाज हल्की हो गयी है और बेईमानी तथा झूठ की तूती बोलने लगी है। भौतिकता जीवन की समग्रता, अविच्छिन्नता को तोड़ घर–परिवारों को तोड़ रही है। संयुक्त परिवार निरन्तर घट रहे हैं। घर–घर की टूटन गांव को तोड़ रही है और गांव टूट–टूट कर शहरों में समा रहे हैं।

''रेणु'' के आशावान मन शैक्षणिक प्रगति से गांव की सामूहिक प्रगति का सपना देखता है, जातीयता का टूटन चाहता बहुत कुछ बदलाव आता भी है। गांव के नवयुवक और स्त्रियां जितेन्द्र की हवेली में आने लगती है। नवयुवक सुवंश–मलारी के प्रेम संबंधों को लेकर उठे वितंडावाद में उसका साथ देते हैं। शिक्षा औद्योगीकरण एवं आधुनिकीकरण गांव को नयी मानसिकता प्रदान करते है। अंधविश्वासों के जड़बद्धता संस्कार अब हिलने लगे हैं।

रेणु'' को ग्राम परिवेश का समग्र बोध है। उन्हें उसके यथार्थ की गहरी परख और पहचान है जिसे वे लोक तत्वों की समाहिति से और भी गहरा चित्रित करते हैं। इस चित्रण में ''रेणु'' विभिन्न बारीकियों, अनेक कोणों एवं विविध आयामों से परिवेश की जीवन्त सृष्टि करते हैं।

हमारे देश के नेता और सरकारी अफसर किस प्रकार गांव का शोषण करते हैं इसका चित्र भी ''जुलूस'' में मिलता है। देवी प्रकोपों के समय पब्लिक कार्यकर्त्ताओं की स्वार्थ लिप्सा पर व्यंग्य करके ''रेणु'' ने इन नेताओं सरकारी अपफसरों पर तीक्ष्ण प्रहार किया है। इस प्रकार शहरी मूल्यों का संक्रमण गांवों में भी हो रहा है। संत्रास, कुंठा, घुटन आदि शहरी तत्व अब धीरे–धीरे गांव में प्रविष्ट हो रहे हैं।

इस प्रकार नये गाँव की नयी समस्या, नये समाज की नयी प्रश्नशीलता और ऐतिहासिक सन्दर्भो में अपने इन नये गांव के नये सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षितिज का उद्घाटन ''रेणु'' की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

संदर्भ –

[1]. भारत यायावर, रेणु रचनावली– पृ0 सं0 – 15
[2]. भारत यायावर, रेणु रचनावली– पृ0 सं0 – 16
[3]. स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास – डॉ0 कांति वर्मा, पृ0 – 194
[4]. सम्पादकीय ''नये उपन्यास'' – आलोचना, अक्टूबर 57, पृ0 1
[5]. ''जुलूस'' पृ0 104